

महिला सशक्तिकरण मे सखी समूह की भूमिका

कृष्णा सालवी

शोधार्थी (अर्थशास्त्र विभाग)
मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय,
उदयपुर (राज.)

सारांश

आज विश्वभर मे हजारों महिला संगठन 'एम्पावरमेंट ऑफ वूमेन' के तहत महिलाओं को सशक्त करने की प्रक्रिया में जुड़ी हुई है। महिलाओं के सशक्तिकरण की यह प्रक्रिया कई दशको में चली आ रही है। महिलाओं को सशक्त व एकजुट करने का सर्वप्रथम प्रयास रूस की क्रान्तिकारी नेता म्लारा जेटकिन ने किया। म्लारा जेटकिन ही वह पहली महिला थी जिसने सर्वप्रथम अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी महिला अधिवेशन यह प्रस्ताव रखा कि प्रत्येक वर्ष 8 मार्च को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाए। इसके पश्चात् महिला सशक्तिकरण की पहल 1985 मे महिला अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन नशैबी मे की गई। महिला सशक्तिकरण का अभिप्राय महिलाओं को पुरुषों के बराबर वैधानिक, राजनीतिक, शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि मे निर्णय लेने की साध्यता हो। अतः भारत मे महिला सशक्तिकरण का उद्देश्य महिलाओं की सामाजिक व आर्थिक दशा को सुधारना है, क्योंकि परिवार, समुदाय या कोई भी राष्ट्र हो अगर महिलाओं को सशक्त किया जाए तो वह पूरे समाज का समग्र उत्थान कर सकती है।

मुख्य शब्द - सशक्तिकरण, सखी समूह, सामाजिक एवं आर्थिक दशा।

Date of Submission: 12-01-2021

Date of Acceptance: 27-01-2021

परिचय

खनिजों की मानव जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका है। यदि कहा जाए कि "मानव के विकास और प्रगति में खनिज पदार्थों का अटूट संबंध रहा है" तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। पाषाण युग, ताम्र युग, लोह युग, इस्पात युग एवं अणु युग आदि मानव उत्थान की विभिन्न सीढ़ियों में खनिज पदार्थों का महत्व दर्शाते हैं।

आज दैनिक उपयोग की लगभग हर वस्तु में कोई न कोई खनिज प्रयोग में आता ही है। किसी भी देश के आर्थिक एवं सामाजिक विकास में खनिज महत्वपूर्ण हैं। खनिज एवं खनिज आधारित उद्योग न केवल बड़े उद्योगों बल्कि लघु उद्योगों के लिए भी कच्चा माल उपलब्ध कराते हैं और इस प्रकार यह पिछड़े क्षेत्रों का विकास कर क्षेत्रिय विकास में योगदान देते हैं, जहां एक ओर खनिज साधन औद्योगिक व्यवस्था के आधार एवं उर्जा के प्रमुख स्रोत हैं वहां दूसरी ओर वे राजनैतिक सुरक्षा एवं शक्ति के स्रोत रोजगार के आधार एवं आर्थिक सुदृढता के प्रतिक माने जाते हैं।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व ब्रिटिश सरकार की दोषपूर्ण आर्थिक नीतियों के कारण देश के खनिज साधनों के विकास एवं दोहन की दिशा में कोई कारगर कदम नहीं उठाया गया किन्तु स्वतन्त्र भारत की सरकार ने योजनाबद्ध आर्थिक विकास में खनिज साधनों के महत्व को देखते हुए इनके खोज विकास, विदोहन एवं अनुरक्षण को पंचवर्षीय योजनाओं का अविभाज्य अंग माना है, जिससे विगत चार दशकों की अवधि में खनिज क्षेत्र में न केवल उत्पादन में वृद्धि अंकित की गई, अपितु अनेक नवीन खनिजों की खोज भी की गई।

भारत में खनिजों और धातुओं का उपयोग बहुत ही प्राचीन काल से होता आया है। धातुओं का खनन प्रारम्भ में कब और कैसे आरम्भ हुआ इसके बारे में कोई निश्चित प्रमाणिक सूत्र तो उपलब्ध नहीं है लेकिन

मौटे तौर पर यह कहा जा सकता है कि वैदिक काल से ही सोने, चांदी, तांबा, टीन, लोहा तथा सीसा धातु का उपयोग होता रहा है। रामायण तथा महाभारत काल में धातुओं के प्रचुर उपयोग के उल्लेख मिलते हैं। इस प्रकार भारत में हिन्दुस्तान जिंक, लैंड, सिल्वर और कैडमियम का एकीकृत खनन और संसाधन उत्पादक है। यह दुनिया का सबसे बड़ा जस्ता उत्पादक है। भारत में हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड खनन प्रक्रिया से संबंधित संस्थान है जिसके उत्पादों का भारत के घरेलू खपत में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

भारत में हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड एक ऐसी संस्थान है, जिसके उत्पादों का सामरिक, व्यावसायिक, घरेलू उपभोग, इस्पात उद्योग एवं विद्युत उपकरणों में उपयोग के साथ-साथ चांदी, कैडमियम और गन्धक का अम्ल का उत्पादन, भारत की घरेलू खपत में भी उपयोगी है। हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड प्रारम्भ में मेटल कॉर्पोरेशन ऑफ इण्डिया लिमिटेड के रूप में चल रहा था, जिसे 10 जनवरी 1966 को भारत सरकार, इस्पात व खान मंत्रालय के अन्तर्गत एक सार्वजनिक उपक्रम के रूप में अधिग्रहित कर हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड के नाम से स्थापित किया गया। इस उपक्रम को अधिग्रहीत करने का मूल उद्देश्य देश की सामरिक महत्व की धातुओं जस्ता और सीसे के उत्पादन को प्रोन्नत करना तथा इसके लिए उसके खनन का विकास करना तथा प्रद्रावण की क्षमताओं को बढ़ाना था, जिससे इन धातुओं के उत्पादन में देश पूर्णतः आत्मनिर्भर बन सके।

भारत सरकार का उपक्रम हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड, भारत में मूलधातु उत्पादन में अग्रणी संगठन है। इस कम्पनी को मांग की पर्याप्त आपूर्ति के लिए खनन एवं प्रद्रावण क्षमताएं विकसित करनी थी। हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड का प्रचालन कार्यकलाप विस्तृत था। समन्तवेक्षण खनन, अयस्क, सीसा, जस्ता, कैडमियम, कोबाल्ट, तांबा तथा बहुमूल्य धातुओं का प्रद्रावण एवं परिशोधन तक के सभी कार्यकलाप कम्पनी ही निष्पादित करती है।

हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड की सामाजिक एवं आर्थिक गतिविधियां

हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड ने अपने सामाजिक, आर्थिक उत्तरदायित्वों के प्रति सजग रहा है। कम्पनी ने समाज कल्याण कार्यक्रम के अन्तर्गत सामाजिक रूप से पिछड़े लोगों के उत्थान हेतु गरीबों तथा आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के तबकों के लिए संस्थान द्वारा अपनी सभी इकाईयों में तथा उसके आस-पास के क्षेत्रों में ऐसे कई कल्याणकारी कार्यक्रम विशेष तौर पर चलाए जा रहे हैं। इस प्रकार संस्थान ने अपने सामाजिक एवं आर्थिक उत्तरदायित्व का निर्वाह सफलतापूर्वक कर रहा है। कम्पनी ग्रामीण लोगों के स्वास्थ्य के अतिरिक्त शिक्षा, जल पूर्ति, अनाज की सप्लाई, कपड़ा वितरण आदि कार्यकलाप सम्पादित करती रहती है, जिससे इसकी इकाईयों व इसके आसपास बस रहे सामाजिक एवं आर्थिक रूप से कमजोर तबके के लोगों का कल्याण हो। कम्पनी द्वारा व्यवस्थित रूप से ग्रामीण विकास कार्यकलापों से इकाईयों के आसपास बस रहे लोगों में आत्मविश्वास की भावना भी जागृत हो रही है।

इसके अतिरिक्त हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड खेल एवं सांस्कृतिक कार्यकलाप के प्रोन्नयन की अपनी नीति के अनुरूप कार्य कर रहा है। फुटबाल, वाॅलीबाल, हाॅकी, बैडमिन्टन आदि खेलों की राष्ट्रीय स्तर की प्रतिस्पर्धाओं के आयोजन के अतिरिक्त कम्पनी कई अन्तर इकाई प्रतिस्पर्धाओं को भी सदैव सहायता प्रदान करती रही है।

इसके अलावा कम्पनी गरीबों को विभिन्न प्रकार से सहायता, पशुओं के लिए चारा, दूरस्थ गांवों के लिए पेयजल की आपूर्ति, कृषकों को नई तकनीकी हेतु प्रशिक्षण एवं सहायता शिक्षा प्रोत्साहन, स्वरोजगार हेतु प्रशिक्षण तथा देश में समय-समय पर बाढ़, भूकम्प, अकाल जैसी आई प्राकृतिक आपदाओं के लिए भी संवेदना प्रदर्शित की है। इस प्रकार सामाजिक व आर्थिक दृष्टि से इस प्रतिष्ठान को अग्रणी माना जा सकता है क्योंकि इसके द्वारा समाज कल्याण की अनेकानेक योजनाएं क्रियान्वित की जाती हैं। और वे इसके स्थाई कार्यक्रमों का एक भाग हैं आसपास के लोगों के कल्याण के साथ उनकी आर्थिक स्थिति के उन्नयन के प्रयास भी संस्थान ने किए हैं जिनमें प्रौढ़ शिक्षा और रोजगारोन्मुख प्रशिक्षण सम्मिलित हैं।

सखी समूह के अन्तर्गत हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड की भूमिका

कहा जाता है कि जब गांव में एक महिला को सामाजिक एवं आर्थिक रूप से सशक्त एवं समृद्ध बनाते हैं, तो वह महिला न केवल अपने परिवार को, अपने गांव को बल्कि अपने देश को सुदृढ़ भी बनाती है। यही मूल कारण बनता है देश के विकास का एवं अर्थव्यवस्था में सुधार का।

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में 83.3 करोड़ जनसंख्या गांवों में रहती है। तथा 37.7 करोड़ जनसंख्या शहरों में रहती है। गांवों की जनसंख्या में तकरीबन जनसंख्या 40.51 करोड़ तथा 42.79 करोड़ पुरुष है। अर्थात् गांवों में महिलाओं की संख्या शहरों की अपेक्षा अधिक है। और यदि इन्हीं ग्रामीण महिलाओं को सामाजिक-आर्थिक रूप से सशक्त बनाने हेतु इन्हें छोटे-बड़े घरेलू उद्योगों से जोड़ेगे तो ये अपना अलग अस्तित्व बनाने में सक्षम होगी और यह अस्तित्व उनके परिवार का मार्गदर्शन बनेगा, साथ ही उनके बच्चों का शिक्षा का स्तर, स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं स्व के विकास में अहम भूमिका निभाएगा।

इसी प्रकार गांवों में महिलाओं की बढ़ती शिक्षा दर तथा उन्हें सामाजिक व आर्थिक रूप से सुदृढ़ करने की चाह ने हिन्दुस्तान जिंक को प्रेरित किया कि वह ग्रामीण व आदिवासी महिलाओं को सशक्तिकरण करने के लिए स्वसहायता समूहों का गठन प्रारम्भ किया। हिन्दुस्तान जिंक ने यह प्रक्रिया वर्ष 2005-06 शुरू कर दी गई। जिसके अन्तर्गत हिन्दुस्तान जिंक ने गांवों में घर-घर जाकर परिवारों को स्वयं सहायता समूह के गठन व उनकी उपयोगिता के बारे में जानकारी दी गई।

कम्पनी ने गांवों की संस्कृति को ध्यान में रखकर सखी समूहों की शुरुआत की क्योंकि वे यह जानते थे कि गांवों में अपने रीति-रिवाज होते हैं। गांवों में महिलाओं को परम्पराओं के अन्तर्गत रहना पड़ता है इन परम्पराओं के रहते इन ग्रामीण महिलाओं को बाहर का कोई भी कार्य स्वतः रूप से करने की आजादी नहीं होती है। शुरुआत में हिन्दुस्तान जिंक को घरों के मुखिया एवं बुजुर्गों को स्वयं सहायता समूह के गठन की उपयोगिता व उससे होने वाले लाभ के बारे में गहन रूप से समझाना पड़ा क्योंकि ये अपने परम्परागत व्यवसाय से बाहर नहीं आना चाहते थे। परिवार के रीति-रिवाज, उठना-बैठना, संगत तथा जातिवाद भी स्वयं सहायता समूहों के गठन में परेशानी पैदा कर रहा था किन्तु निरन्तर प्रयास से हिन्दुस्तान जिंक ने स्वयं सहायता समूह के गठन की शुरुआत की। इस प्रकार एक से दस, दस से बीस, बीस से सौ, सौ से दोसौ इस तरह वर्ष 2014 तक 475 स्वयं सहायता समूहों का गठन हो चुका था। यह सभी समूह वर्तमान में हिन्दुस्तान जिंक के 'सखी' स्वयं सहायता समूह के रूप में पहचाने जाने लगे हैं।

हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड द्वारा संचालित सखी समूह महिलाओं के लक्ष्य की दिशा का सशक्तिकरण है। सशक्तिकरण की दिशा में अनेक सरकारी गैर सरकारी तथा सहकारी क्षेत्र में अनेक कार्यक्रमों के द्वारा वृहत प्रयास किए गए हैं किन्तु कम्पनी द्वारा इस ओर कदम बढ़ाना खुद ही में एक अद्भुत प्रयास है। जहां खदान मालिकों का खदान श्रमिकों के जीपन स्तर को ऊँचा उठाने व उन्हें विकसित करने का प्रयास किया गया है। जब एक ही व्यवसाय की महिलाएं संगठित होकर माल तैयार करने व बेचने का कार्य करती हैं, तो वे व्यापारियों के शोषण, कच्चे माल की उंची दरे एवं बाजार उपलब्धि की मुश्किलों को आसानी से दूर कर सकती हैं तथा अपने व्यवसाय में नई तकनीक का उपयोग करके परम्परागत कौशल को बढ़ावा देकर अधिक प्रभावशाली व उपयोगी बना सकती हैं।

वर्तमान में महिलाओं को सशक्त करने का अर्थ है उन्हें नए क्षितिज दिखाने का प्रयास जिसमें वे नई क्षमताओं को प्राप्त कर स्वयं को नए तरीके से सक्षम बना सकें तथा आर्थिक रूप से स्वयं को सशक्त कर सकें। प्रारम्भ में समूह के गठन के बाद इन महिलाओं को बचत के बारे में सिखाया, उसके पश्चात् महिलाओं को बैंकों के द्वारा जोड़कर बैंकों में खाते खुलवाए गए ताकि वे अपने बचत बैंकों में जमा करावा सकें।

उसके बाद इन महिलाओं को इनकी इच्छानुसार एवं बढ़ते बाजार के मुताबिक प्रशिक्षण प्रदान किया। ये ग्रामीण महिलाएं मूलतः दो परिवेश में प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहती थीं। पहला कृषि एवं पशुपालन तो दूसरा गैर कृषि कार्य यानि वस्त्रों व साज-सजा के सामान संबंधित। हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड ने खेती-बाड़ी से जुड़ी

महिलाओं को कृषि उत्थान, नकदी फसल, मल्टीक्रॉपिंग तथा बीज व उर्वरक के चयन में प्रशिक्षित किया। पशुपालन में मुर्गीपालन व बकरी पालन से किस प्रकार लाभ उठाया जाए, इस पर जोर दिया गया।

दूसरा महिलाओं को कढ़ाई, बुनाई, मिनाकारी, एम्बाॅइडी, गहने बनाना, घर की साज-सज्जा का सामान तथा सिलाई आदि का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। वर्तमान में लिमिटेड द्वारा 22 ग्रामीण उद्योग चलाए जा रहे हैं जिसमें मुख्यतः रूप सज्जा, जुट प्रोडक्ट, माइक्रो एंटरप्राइजेज, मीनाकारी, मोती के गहने, बकरी प्रोजेक्ट, ब्लॉक प्रिन्टिंग कार्य, हेडलुम, एम्ब्रोडयरी इत्यादि।

सखी समूहों की यह महिलाएं दिन में लगभग 4 घण्टे काम करती हैं। महिलाएं अपने घरेलू कार्यों अथवा दिनचर्या के कार्यों के साथ-साथ नियमित तौर पर प्रतिदिन प्रशिक्षण प्राप्त करती हैं। तथा सामान बनाती। 'सखी' सहायता समूहों के बनाए सामानों को बेचने के लिए हिन्दुस्तान जिंक ने इन समूहों को विभिन्न बाजारों से जोड़ा है।

इस प्रकार हिन्दुस्तान जिंक की प्रमुख परियोजना 'सखी' को ग्रामीण महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों में लाने और नेतृत्व, कौशल विकास, बचत और उद्यमिता के आसपास अपनी क्षमता विकसित करने की दिशा में सक्षम किया गया है। अभी वर्तमान में यह समूह आंगनवाडी में सम्मिलित हुआ है। जो वर्तमान चच् माॅडल पर आधारित है जिसमें स्कूल युनिफार्म सिलाई का कार्य वृहद स्तर पर किया जा रहा है। हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड द्वारा 475 स्वयं सहायता समूह चलायमान हैं। जिसमें 6000 ग्रामीण व आदिवासी महिलाएँ लाभान्वित हो रही हैं। जिनमें इनको चार से पाँच घण्टे प्रशिक्षण दिया जाता है।

हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड के सखी अभियान के दो व्यापक उद्देश्य हैं-

1. हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड स्वयं सहायता समूह में सभी को लाने के लिए ग्रामीण सखी के लिए और एक छतरी के नीचे आदिवासी महिलाओं को बाहरी दुनिया के लिए सामुहिक शक्ति के रूप में लाना है।
2. सखी उत्पादों की ऑन लाइन बिक्री और नए बाजारों हेतु बिक्री के लिए सूक्ष्म वित्त पोषण प्रदान करता है। हिन्दुस्तान जिंक अकेले ही 215 स्वयं सहायता समूह सखी की सुविधा उदयपुर, चित्तौड़, भीलवाड़ा, राजसमंद में करता है एवं सभी समूह बैंकों के साथ जुड़े हुए हैं और उनके बैंक खातों को संचालित करते हैं। हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड की भूमिका इस संदर्भ में भी महत्वपूर्ण है जो इन महिलाओं को पंचायत मामलों में भाग लेने व विभिन्न घरेलू समस्याएं, सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं के लिए भी मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। प्रस्तुत शोध के द्वारा सखी समूह महिलाओं को सशक्त बनाने में हिन्दुस्तान जिंक की भूमिका का अध्ययन किया गया। इस प्रकार 27 फरवरी 2019 को दिल्ली में आयोजित एक समारोह में हिन्दुस्तान जिंक ने अपने महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम 'सखी' के लिए दैनिक ब्रैट अवार्ड 2019 प्राप्त किया है।

हिन्दुस्तान जिंक के महिला सशक्तिकरण अभियान 'सखी' के अन्तर्गत समय-समय पर विभिन्न कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं। इन कार्यशालाओं में कपड़ों और बाजार में बदलते परिदृश्य, हस्तकला उद्योग के विकास, उत्पादन में गुणवत्ता की जांच, बदलते मौसम के अनुसार रंग संयोजन, वर्तमान फैशन के रुझान और उत्पादों के मूल्य निर्धारण के अनुसार सत्र रखे जाते हैं। अर्थात् सखी अभियान ने महिलाओं को एक ही छतरी के नीचे एक सामुहिक बल बनने, परस्पर विचार-विमर्श करने, बाजार का ज्ञान साझा करेंगे साथ ही वे सामाजिक-आर्थिक रूप से सशक्त बनाते हैं।

वर्तमान में जून 2020 तक सखी परियोजना के अन्तर्गत 1857 सखी समूहों के बैंक खातों से जोड़ा जा चुका है जिनकी सामुहिक बचत 9.60 करोड़ से अधिक है एवं कुल ऋण 28.04 करोड़ है। अब तक 22 हजार 250 महिलाओं द्वारा कम ब्याज दरों पर आजीविका, आय सृजन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं ऋण भुगतान के लिए समूह ऋण का लाभ उठाया है।

संदर्भ ग्रन्थ